अनुक्रमणिका

SHIVAJI UNIVERSITY
LIBRARY
KOLHAPUR

अनुक्रमणिका

प्राक्कथन

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय - दूधनाथ सिंह : व्यक्तित्व एवं कृतित्व 1 - 21

1.1 व्यक्ति-परिचय
    1.1.1 जन्म तिथि तथा जन्म स्थान
    1.1.2 माता-पिता
    1.1.3 परिवार
    1.1.4 बचपन
    1.1.5 शिक्षा
    1.1.6 नौकरी
    1.1.7 विवाह
    1.1.8 रहन-सहन
    1.1.9 संतान
    1.1.10 मित्र-परिवार
    1.1.11 संप्रति

1.2 व्यक्तित्व के विविध पहलू
    1.2.1 बीमारी से लड़नेवाले
    1.2.2 स्वाभिमानी
    1.2.3 प्रेमचंद के प्रति आदरभाव रखनेवाले
    1.2.4 दिक्कतों का सामना करनेवाले
    1.2.5 प्रेमीरूप
    1.2.6 घूमने-फिरने के शौकीन
    1.2.7 मातृभाषा के प्रति प्रेम

1.2.8 अतीत एवं इतिहास के अध्येता
1.2.9 नारी जीवन की वास्तविकता के जानकार
1.2.10 व्यसनहीन
1.2.11 प्रतिभासंपन्न
1.2.12 आदर्श पिता
1.2.13 दिल लगाकर काम करनेवाले
1.2.14 संघर्षमय जीवन
1.2.15 वामपंथ के हिमायती
1.2.16 भावुक
1.2.17 नवयुवकों के प्रेरणास्थान
1.2.18 संपादक
1.2.19 सदैव व्यस्त रहनेवाले

1.3 कृतित्व अर्थात साहित्य संसार
1.3.1 उपन्यास-साहित्य
1.3.2 कहानी-संग्रह
1.3.2.1 लंबी कहानी
1.3.3 कविता-संग्रह
1.3.3.1 लंबी कविता
1.3.4 नाटक-साहित्य
1.3.5 संस्मरण
1.3.6 आलोचना-साहित्य
1.3.7 पत्रिका
1.3.8 अन्य रचनाएँ

1.4 प्राप्त साहित्य की संक्षिप्त जानकारी

निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय – दूधनाथ सिंह के उपन्यास : परिचयात्मक विवेचन 22 - 45

प्रास्ताविक

2.1 **निष्कासन**

- 2.1.1 विषयवस्तु : परिचयात्मक विवेचन
- 2.1.2 पात्र योजना : परिचयात्मक विवेचन
- 2.1.2.1 प्रधान पात्र
  - 2.1.2.1.1 लड़की
  - 2.1.2.1.2 डॉ. श्रीमती महिष्मती सिंह (मैम)
  - 2.1.2.1.3 मनोज पांडेय
  - 2.1.2.1.4 बड़ी बहन
  - 2.1.2.2 गौण पात्र
- 2.1.3 भाषा शैली : परिचयात्मक विवेचन
- 2.1.4 प्रतिपाद्य : परिचयात्मक विवेचन

निष्कर्ष

2.2 **आख़िरी कलाम**

- 2.2.1 विषयवस्तु : परिचयात्मक विवेचन
- 2.2.2 पात्र योजना : परिचयात्मक विवेचन
- 2.2.2.1 प्रधान पात्र
  - 2.2.2.1.1 प्रो. आचार्य तत्सत पांडेय
  - 2.2.2.1.2 सर्वात्मन
  - 2.2.2.1.3 बिल्लेश्वर
  - 2.2.2.1.4 मियाँ जमील
- 2.2.2.2 गौण पात्र
- 2.2.3 भाषा शैली : परिचयात्मक विवेचन
- 2.2.4 उद्देश्य : परिचयात्मक विवेचन

निष्कर्ष

समन्वित मूल्यांकन

तृतीय अध्याय - दूधनाथ सिंह के उपन्यास और शिक्षा जगत का यथार्थ 46 - 81

प्रास्ताविक

3.1 शिक्षा शब्द का अर्थ

3.2 शिक्षा शब्द की परिभाषा

3.3 शिक्षा जगत के यथार्थ से तात्पर्य

3.4 विवेच्य उपन्यासों में चित्रित शिक्षा जगत का यथार्थ

3.4.1 छात्र जीवन से संबंधित अभिव्यक्त यथार्थ

3.4.1.1 प्रतिकूल परिस्थिति का सामना करके पढ़नेवाले छात्र

3.4.1.2 फैशन तथा सौंदर्य प्रसाधनों की तरफ आकर्षित छात्र

3.4.1.3 छात्रों में प्रेम संबंधों की स्थिती

3.4.1.4 छात्रों में व्यसनाधीनता

3.4.1.5 ग्रामीण अंचलों से विश्वविद्यालय में आनेवाले छात्र

3.4.1.6 छात्राओं को पढ़ानेवाले माता-पिता की अलग मानसिकता

3.4.1.7 विश्वविद्यालय में पढ़नेवाली छात्राओं का जीवन यथार्थ

3.4.1.8 बाहर की चकाचौंध तथा फिल्मी दुनिया की तरफ आकर्षित छात्र

3.4.1.9 जातीयता माननेवाले छात्र

3.4.1.10 अन्यायकारी व्यवस्था के प्रति आवाज उठानेवाले छात्र

3.4.1.11 शोधकार्य के लिए विदेश जानेवाले छात्र

3.4.1.12 गुंड़ागर्दी तथा लड़कियों से छेड़छाड़ करनेवाले छात्र

3.4.1.13 शिक्षा के प्रति निरुत्साही छात्र

3.4.2 छात्रावास से संबंधित अभिव्यक्त यथार्थ

3.4.2.1 गैरकानूनी रहनेवाली छात्रा

3.4.2.2 छात्रावास की रोजमर्रा जिंदगी का यथार्थ

3.4.2.3 छात्रावास में आएँ मेहमानों के स्वागत की अलग परंपरा

3.4.2.4 छात्राओं का दैहिक शोषण

3.4.2.5 छात्रों को ड़रा-धमकाकर रिश्वतखोरी

3.4.2.6 छात्रावास की छात्र नेता
3.4.2.7 छात्रावास की अधीक्षिका
3.4.3 अध्यापकों से संबंधित अभिव्यक्त यथार्थ
3.4.3.1 व्यसनी अध्यापक
3.4.3.2 जातीयता माननेवाले अध्यापक
3.4.3.3 चोरी करनेवाले अध्यापक
3.4.3.4 लाचार या चापलूसी करनेवाले अध्यापक
3.4.3.5 राजनेताओं से संबंध रखनेवाले अध्यापक
3.4.3.6 अध्यापकों में आपसी मनमुटाव
3.4.3.7 आदर्श अध्यापक
3.4.4 प्रशासन से संबंधित अभिव्यक्त यथार्थ
3.4.4.1 महामहिम राज्यपाल (कुलाधिपति)
3.4.4.2 कुलपति
3.4.4.3 उप कुलपति
3.4.4.4 पुलिस
3.4.4.5 मुख्यमंत्री
3.4.5 शिक्षा व्यवस्था से संबंधित अन्य यथार्थ
3.4.5.1 तदर्थ नियुक्ति
3.4.5.2 अखबारी दुनिया का यथार्थ
3.4.5.3 संस्थाचालकों का यथार्थ
3.4.5.4 राजनैतिक यथार्थ

निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय - दूधनाथ सिंह के उपन्यास और सांप्रदायिक यथार्थ 82 - 111

प्रास्ताविक

4.1 **सांप्रदायिकता शब्द का अर्थ**

4.2 **सांप्रदायिकता शब्द की परिभाषा**

4.3 **सांप्रदायिक यथार्थ से तात्पर्य**

4.4 विवेच्य उपन्यासों में चित्रित सांप्रदायिक यथार्थ

4.4.1 धर्मांधता एवं जातीयता
4.4.2 हिंदू-मुस्लिमों के बीच अनबन
4.4.3 दलित और सवर्णों के बीच अनबन
4.4.4 दँगे-फसाद
4.4.5 धार्मिक स्थलों एवं घरों का ध्वंस
4.4.6 शिक्षा व्यवस्था
4.4.7 अखबार
4.4.8 राजनीति
4.4.9 विवादास्पद धार्मिक किताबें / ग्रंथ
4.4.10 पुलिस
4.4.11 मिथकीयता
4.4.12 धर्म के नाम पर अधर्म
4.4.13 वर्णवादी व्यवस्था
4.4.14 सांप्रदायिकता के परिणाम स्वरूप साँझा संस्कृति का ह्रास

निष्कर्ष

पंचमं अध्याय - दूधनाथ सिंह के उपन्यास और वर्तमानकालीन विविध यथार्थ समस्याएँ 112 - 141

प्रास्ताविक

5.1 वर्तमानकालीन विविध यथार्थ समस्याओं से तात्पर्य

5.2 विवेच्य उपन्यासो में चित्रित वर्तमानकालीन विविध यथार्थ समस्याएँ

5.2.1 जातिवाद की समस्या
5.2.2 आर्थिक समस्या
5.2.3 धर्मांधता के कारण उपजी समस्या
5.2.4 पति-पत्नी के बीच अनपन की समस्या

5.2.5 भ्रष्टाचार की समस्या

5.2.6 सांप्रदायिकता की समस्या

5.2.7 प्रेम तथा अंतर्जातीय विवाह की समस्या

5.2.8 आत्महत्या की समस्या

5.2.9 संतानों को लेकर माता-पिता की समस्या

5.2.10 अखबार की समस्या

5.2.11 आज के मठों की समस्या

5.2.12 नारी समस्या

5.2.13 शिक्षा व्यवस्था की समस्या

5.2.14 कार्यालयों की समस्या

5.2.15 दलित उत्पीड़न की समस्या

5.2.16 मुस्लिमों की समस्या

5.2.17 अवैध संतान की समस्या

5.2.18 गुंड़ागर्दी तथा छेड़छाड़ की समस्या

5.2.19 अन्य समस्याएँ

निष्कर्ष

उपसंहार 142 - 147

परिशिष्ट 148

संदर्भ ग्रंथ-सूची 149 - 155

❑ ❑ ❑ ❑